



KVS – PRT

Special Educator

केन्द्रीय विद्यालय संगठन (KVS)

भाग - 2

खंड A (अनिवार्य)

वृद्धि और विकास



INDEX

S.N.	Content	P.N.
अध्याय – 2 वृद्धि और विकास		
1.	वृद्धि और विकास का अर्थ, परिभाषा और अवधारणा	1
2.	वृद्धि एवं विकास के सिद्धांत	6
3.	विकास को प्रभावित करने वाले कारक	11
4.	विकास के क्षेत्र	18
5.	विकासात्मक मील के पथर: सकल मोटर, ठीक मोटर, संवेदी और शारीरिक विकास	25
6.	विकासात्मक मील के पथर: संज्ञानात्मक, भाषा, सामाजिक-भावनात्मक और नैतिक विकास	32
7.	प्रसवपूर्व विकास (जर्मिनल, एम्ब्रियोनिक, फीटल स्टेज) और जोखिम	40
8.	साइकोलॉजी और लर्निंग: मतलब, प्रासंगिकता, सिद्धांत, स्टाइल और फैक्टर्स	65
9.	सीखने के बेसिक सिद्धांत (बिहेवियरिस्ट, कॉग्निटिव, ह्यूमैनिस्टिक) कंडीशनिंग, रीइनफोर्समेंट, कंस्ट्रक्टिविस्ट आइडिया और इनक्लूसिव एप्लीकेशन के साथ	120
10.	सीखने के तरीके, अलग-अलग तरह की समझ और अलग-अलग तरह के सीखने वाले	126
11.	ध्यान दें: टाइप, फैक्टर, प्रॉब्लम, मैनेजमेंट और क्लासरूम स्ट्रेटेजी	138
12.	परसेप्शन: सिद्धांत, प्रकार, समस्याएं और एजुकेशनल असर गहराई से	145
13.	मेमोरी: टाइप, स्टेज, वर्किंग मेमोरी, लॉन्ग-टर्म मेमोरी, नेमोनिक्स और दिव्यांगों में मेमोरी से जुड़ी दिक्कतें	152
14.	इंटेलिजेंस: परिभाषाएँ, थ्योरी, असेसमेंट, गिफ्टेड और स्लो लर्नर्स, डिसेबिलिटी रिलेशन	159
15.	मोटिवेशन: टाइप, थ्योरी, क्लासरूम एप्लीकेशन और स्पेशल नीड्स वाले बच्चों में मोटिवेशन बढ़ाना	166
16.	कक्षा प्रबंधन और समावेशी कक्षा अभ्यास	173

वृद्धि और विकास

वृद्धि और विकास का अर्थ, परिभाषा और अवधारणा

1. परिचय

- बच्चों को समझने के लिए - खासकर इनक्लूसिव क्लासरूम में - टीचरों और स्पेशल एजुकएटर के लिए **ग्रोथ** और **डेवलपमेंट**, उनके अंतर, उनके कोर्स और वे सीखने और व्यवहार को कैसे आकार देते हैं, यह समझना ज़रूरी है। हर बच्चा, चाहे वह डिसेबिलिटी वाला हो या नहीं, जन्म से बचपन तक पहले से पता बदलावों से गुज़रता है। ये बदलाव फिजिकल, कॉग्निटिव, इमोशनल, सोशल, भाषा पर आधारित और नैतिक होते हैं।
- इस कॉन्सेप्ट में महारत हासिल करना डेवलपमेंटल माइलस्टोन, सीखने के पैटर्न, व्यवहार से जुड़ी चुनौतियों, डिसेबिलिटी की पहचान और सही एजुकेशनल तरीकों को समझने का आधार है।
- ग्रोथ और डेवलपमेंट **लगातार चलने वाली, डायनैमिक और आपस में जुड़ी हुई प्रोसेस हैं** जो पूरे बच्चे को बनाती हैं।

2. विकास का अर्थ

- ग्रोथ का मतलब शरीर में होने वाले **फिजिकल और मेज़रेबल बदलावों से है। यह क्वांटिटेटिव** बढ़ोतरी को दिखाता है।

विकास के प्रमुख पहलू

- ऊँचाई में वृद्धि
 - वजन में वृद्धि
 - अंगों के आकार में वृद्धि
 - हड्डियों और मांसपेशियों का विकास
 - शरीर के अनुपात में परिवर्तन
- ग्रोथ **स्ट्रक्चरल**, दिखने वाली और मापने लायक होती है।

वृद्धि की विशेषताएं

- इकाइयों में मापा गया (सेमी, किलोग्राम)
 - हर बच्चे में अलग-अलग होता है
 - आनुवंशिकता, पोषण, हार्मोन से प्रभावित
 - शैशवावस्था, किशोरावस्था में तीव्र
 - मध्य बचपन में धीमा हो जाता है
 - सीमित समय के लिए होता है (बड़े होने पर बंद हो जाता है)
- उदाहरण: एक बच्चा लंबा, भारी और शारीरिक रूप से मजबूत होता है।

3. विकास का अर्थ

- डेवलपमेंट का मतलब है बच्चे में **फंक्शनल और बिहेवियरल बदलाव। यह क्वालिटेटिव होता है** और इसमें नई एबिलिटी, स्किल और कैपेबिलिटी हासिल करना शामिल है।

विकास के प्रमुख पहलू

- सोच
 - तर्क
 - भाषा अधिग्रहण
 - भावनात्मक विनियमन
 - सामाजिक कौशल
 - नैतिक समझ
- डेवलपमेंट को नंबरों से नहीं मापा जाता; बल्कि इसे काबिलियत, मैच्योरिटी, व्यवहार और स्किल्स से समझा जाता है।

विकास की विशेषताएं

- गुणात्मक
- प्रगतिशील
- जीवन भर निरंतर
- विकास से अधिक जटिल

- इसमें परिपक्वता + सीखना शामिल है
- यह स्टेज में होता है लेकिन हर बच्चे में अलग-अलग होता है
- आनुवंशिकता और पर्यावरण दोनों से प्रभावित
उदाहरण: एक बच्चा बोलना, नियम समझना, दोस्ती करना शुरू कर देता है।

4. ग्रोथ और डेवलपमेंट के बीच अंतर

पहलू	विकास	विकास
प्रकृति	भौतिक परिवर्तन	कार्यात्मक/व्यवहारिक परिवर्तन
प्रकार	मात्रात्मक	गुणात्मक
द्वारा मापा गया	ऊँचाई, वजन	कौशल और क्षमताओं
अवधि	परिपक्वता पर रुक जाता है	जिंदगी भर
केंद्र	शरीर के विशिष्ट अंग	संपूर्ण बच्चा
उदाहरण	लंबा, भारी	होशियार, आत्मविश्वासी, सामाजिक

ग्रोथ और डेवलपमेंट दोनों **एक साथ होते हैं**, और एक दूसरे पर असर डालते हैं।

5. ग्रोथ और डेवलपमेंट के बीच संबंध

वृद्धि और विकास:

- समानांतर चलें
- एक दूसरे को प्रभावित करें
- अन्योन्याश्रित हैं
जिस बच्चे का फिजिकल ग्रोथ ठीक होता है, उसका मोटर डेवलपमेंट बेहतर होता है।
जिस बच्चे का कॉग्निटिव डेवलपमेंट बेहतर होता है, वह तेज़ी से सीखता है, जिससे ब्रेन ग्रोथ और बढ़ती है।

दिव्यांग बच्चों में यह रिश्ता अलग हो सकता है:

- CP में ग्रोथ नॉर्मल हो सकती है, लेकिन मोटर डेवलपमेंट में देरी हो सकती है।
- ASD में, ग्रोथ तो आम हो सकती है, लेकिन सोशल-इमोशनल डेवलपमेंट में कमी आ सकती है।
- ID में ग्रोथ नॉर्मल हो सकती है, लेकिन कॉग्निटिव डेवलपमेंट धीमा हो सकता है
इसलिए, स्पेशल एजुकेटर्स को इन बदलावों को समझना चाहिए।

6. विकास की विशेषताएं

1. विकास एक सतत प्रक्रिया है

- यह गर्भधारण से शुरू होता है और जीवन भर चलता रहता है।

2. विकास व्यवस्थित और क्रमिक है

बच्चे एक खास क्रम में स्किल्स हासिल करते हैं:

- बैठना → रेंगना → खड़ा होना → चलना

3. विकास सामान्य से विशिष्ट की ओर बढ़ता है

- एक बच्चा पूरा हाथ हिलाता है → बाद में उंगलियों से पकड़ता है।

4. विकास सेफ़लोकॉडल और प्रॉक्सिमोडिस्टल पैटर्न को फ़ॉलो करता है

- सेफ़लोकॉडल: सिर → पैर की अंगुली की दिशा
- प्रॉक्सिमोडिस्टल: केंद्र → बाहर की ओर

5. विकास पूर्वानुमानित है

- हालांकि बच्चे अलग-अलग होते हैं, लेकिन मोटे तौर पर पैटर्न का अंदाज़ा लगाया जा सकता है।

6. विकास मैच्योरिटी और सीखने पर निर्भर करता है

- मैच्योरिटी → बायोलॉजिकल रेडीनेस
- लर्निंग → एनवायरनमेंट, एक्सपीरियंस, ट्रेनिंग

7. विकास सरल से जटिल की ओर बढ़ता है

- बड़बड़ाना → शब्द → वाक्य → बातचीत

8. विकास की दर अलग-अलग लोगों में अलग-अलग होती है

- कोई भी दो बच्चे एक जैसे नहीं होते।

9. विकास आपस में जुड़ा हुआ है

- फिजिकल, कॉग्निटिव, इमोशनल और सोशल डोमेन एक दूसरे पर असर डालते हैं।

10. विकास पर आनुवंशिकता और पर्यावरण दोनों का प्रभाव पड़ता है

- जीन + न्यूट्रिशन + पेरेंटिंग + स्कूलिंग मिलकर विकास को आकार देते हैं।

7. डेवलपमेंट के डाइमेंशन या डोमेन (फाउंडेशन ओवरव्यू)

पाँच मुख्य डोमेन हैं:

1. शारीरिक विकास

- शरीर की वृद्धि
- मोटर कौशल
- दिमाग का विकास।
- कोऑर्डिनेशन, मूवमेंट, हैंडराइटिंग के लिए ज़रूरी।

2. संज्ञानात्मक विकास

- सोच
- समझ
- याद
- प्रॉब्लम-सॉल्विंग
- एकेडमिक लर्निंग के लिए ज़रूरी है।

3. भाषा विकास

- भाषण
- शब्दावली
- व्याकरण
- कम्युनिकेशन
- स्कूल की तैयारी का मज़बूत प्रेडिक्टर है।

4. सामाजिक-भावनात्मक विकास

- भावनाएँ
- रिश्ते
- साथियों के साथ रिश्ते के लिए सोशल मेलजोल ज़रूरी है।

5. नैतिक विकास

- सही बनाम गलत
 - मान
 - नैतिक व्यवहार
- सभी डोमेन आपस में इंटरैक्ट करते हैं और पूरे बच्चे को बनाते हैं।

8. ग्रोथ और डेवलपमेंट का कॉन्सेप्ट: एक होल-चाइल्ड अप्रोच

- ग्रोथ और डेवलपमेंट को समझने के लिए बच्चे को पूरी तरह से देखना ज़रूरी है।

पूरे बच्चे के नज़रिए में ये शामिल हैं:

- शारीरिक विकास
- संज्ञानात्मक कौशल
- भावनात्मक परिपक्वता
- सामाजिक कौशल
- संचार क्षमताएँ
- नैतिक समझ
- अनुकूली/कार्यात्मक कौशल

टीचर्स को ये पहचानना होगा:

- विशिष्ट विकास
- विलंबित विकास
- विचलित विकास
- बेमेल पैटर्न (जहां एक डोमेन दूसरों से बहुत पीछे है)
विकलांगता की जल्दी पहचान के लिए यह ज़रूरी है।

9. विकासात्मक कार्य

- डेवलपमेंटल काम वे उपलब्धियाँ हैं जिनकी उम्मीद एक खास उम्र के दौरान की जाती है।

उदाहरण:

- बचपन: लगाव, बेसिक मोटर स्किल्स
- प्रारंभिक बचपन: भाषा, स्वतंत्रता
- मध्य बचपन: पढ़ाई-लिखाई के हुनर, साथियों के साथ रिश्ते
इन कामों को पूरा न कर पाने पर दखल की ज़रूरत पड़ सकती है।

10. दिव्यांग बच्चों में विकास के पैटर्न

दिव्यांग बच्चों में ये लक्षण दिख सकते हैं:

1. विलंबित विकास

- आम बच्चों की तुलना में स्किल्स देर से डेवलप होती हैं (जैसे, 1 साल की उम्र के बजाय 3 साल में चलना)

2. विचलित विकास

- विकास का क्रम असामान्य है (जैसे, ऑटिज़्म से पीड़ित बच्चे की याददाश्त तो अच्छी हो जाती है लेकिन बातचीत कमज़ोर होती है)

3. असमान विकास

- कुछ स्किल्स बेहतर होती हैं, कुछ में देरी होती है (जैसे, SLD बच्चा जो अच्छी रीज़निंग करता है लेकिन पढ़ नहीं पाता)

4. प्रतिगमन

- पहले सीखे गए स्किल्स का नुकसान
- (कुछ न्यूरोलॉजिकल डिसऑर्डर में देखा जाता है)
- टीचर्स को इन अजीब पैटर्न को जल्दी पहचान लेना चाहिए।

11. शिक्षकों के लिए ग्रोथ और डेवलपमेंट को समझने का महत्व

1. सीखने की ज़रूरतों को पहचानने में मदद करता है

टीचर तब नोटिस करते हैं जब बच्चा इन चीज़ों में पीछे रहता है:

- भाषण
- मोटर कौशल
- ध्यान
- सामाजिक विकास

2. क्लासरूम प्लानिंग में मदद करता है

- आयु-उपयुक्त गतिविधियाँ
- विभेदित कार्य
- लचीला समूहीकरण

3. IEP डिज़ाइन करने में मदद करता है

- डेवलपमेंटल लेवल को समझने से रियलिस्टिक गोल्स मिलते हैं।

4. व्यवहार को मैनेज करने में मदद करता है

- इमोशनल मैच्योरिटी बिहेवियर पैटर्न पर असर डालती है।

5. विकलांगता की जल्दी पहचान करने में मदद करता है

- कभी-कभी टीचर्स पेरेंट्स से पहले रेड फ्लैग्स का पता लगा लेते हैं।

6. स्कूल के कामों के लिए तैयारी का अंदाज़ा लगाने में मदद करता है

- PRT लेवल (3-8 साल) में यह खास तौर पर ज़रूरी है।

7. माता-पिता के साथ मिलकर काम करने में मदद करता है

- टीचर माता-पिता को गाइड करते हैं कि बच्चे से क्या उम्मीद करें।

8. अवास्तविक उम्मीदों से बचने में मदद करता है

- आम विकास को जानने से धीरे सीखने वाले बच्चों को गलत लेबल लगाने से बचा जा सकता है।

12. बच्चों में विकास संबंधी विविधताएँ

बच्चे अलग-अलग होते हैं:

- गति
- क्षमता
- ताकत
- सीखने के पैटर्न

बदलाव इन वजहों से होते हैं:

- आनुवंशिकी
- घर का वातावरण
- विकलांग
- पोषण
- जन्म की स्थितियाँ

वेरिफिकेशन को समझने से टीचर्स को यह पक्का करने में मदद मिलती है:

- किसी भी बच्चे पर लेबल नहीं लगाया गया है
- सहायता अनुकूलित है
- समावेशी प्रथाएँ फलती-फूलती हैं

13. विकास में निरंतर मूल्यांकन

टीचर्स इस्तेमाल करते हैं:

1. अवलोकन

- कक्षा में स्वाभाविक व्यवहार

2. किस्सागोई के रिकॉर्ड

- मुख्य घटनाओं पर संक्षिप्त नोट्स

3. चेकलिस्ट

- विकासात्मक महत्वपूर्णता

4. पोर्टफोलियो

- समय के साथ बच्चे का काम

5. स्क्रीनिंग टूल्स

- जल्दी पता लगाने के लिए
- असेसमेंट सिर्फ पढ़ाई ही नहीं, बल्कि ग्रोथ और डेवलपमेंट को ट्रैक करने में भी मदद करता है।

14. तत्परता की अवधारणा

- रेडीनेस बच्चे की सीखने के कामों के लिए तैयारी है।

स्कूल की तैयारी में शामिल हैं:

- मोटर नियंत्रण
- भाषा कौशल
- संज्ञानात्मक कौशल
- भावनात्मक विनियमन
- सामाजिक कौशल
- स्वतंत्रता

जो बच्चे तैयार नहीं होते, उन्हें मुश्किल होती है, खासकर वे जिन्हें देर हो जाती है या जो विकलांग होते हैं।

इसलिए बचपन के शुरुआती शिक्षकों को विकास को अच्छी तरह समझना चाहिए।

15. समावेशी कक्षा में आवेदन

- टीचर्स को डेवलपमेंटल लेवल के आधार पर टीचिंग को बदलना चाहिए।

1. शारीरिक विकास से जुड़ी बातें

- मोटर गतिविधियाँ प्रदान करें
- मूवमेंट ब्रेक की अनुमति दें
- बैठने की व्यवस्था संशोधित करें

2. कॉग्निटिव डेवलपमेंट से जुड़ी बातें

- ठोस सामग्री का उपयोग करें
- कार्यों को तोड़ें
- दृश्य सहायता प्रदान करें

3. भाषा विकास से जुड़ी बातें

- मॉडल भाषण
- इशारों का प्रयोग करें
- ज़रूरत पड़ने पर AAC उपलब्ध कराएं

4. सामाजिक-भावनात्मक विचार

- साथियों के साथ बातचीत को प्रोत्साहित करें
- भावनात्मक साक्षरता सिखाएं
- पूर्वानुमानित दिनचर्या प्रदान करें

दिव्यांग बच्चों को विकास के हिसाब से सही तरीकों से सबसे ज्यादा फ़ायदा होता है।

16. निष्कर्ष

- ग्रोथ और डेवलपमेंट बच्चों की साइकोलॉजी और एजुकेशन की

मुख्य नींव है। एक टीचर जो समझता है:

- विशिष्ट क्या है
- क्या देरी हो रही है
- विचलन क्या है
- असमान क्या है

एक ऐसा टीचर जो जल्दी पहचान करने, असरदार तरीके से पढ़ाने और सबको साथ लेकर चलने वाले क्लासरूम मैनेजमेंट में काबिल हो।

वृद्धि एवं विकास के सिद्धांत

1. परिचय

- ग्रोथ और डेवलपमेंट को समझना सिर्फ परिभाषाओं तक ही सीमित नहीं है।
- यह समझने के लिए कि बच्चे कैसे बढ़ते हैं, स्किल्स कैसे आती हैं, देरी क्यों होती है, और अलग-अलग डेवलपमेंटल पैटर्न वाले बच्चों को कैसे सपोर्ट किया जाए, हमें ग्रोथ और डेवलपमेंट को कंट्रोल करने वाले प्रिंसिपल्स को समझना होगा।
- ये सिद्धांत इंसानी विकास के नियमों या कानूनों की तरह काम करते हैं। ये टीचरों को व्यवहार का अनुमान लगाने, बदलावों को समझने, देरी का पता लगाने और विकास के हिसाब से सीखने के अनुभव डिज़ाइन करने में मदद करते हैं।
- ये यूनिवर्सल हैं - सभी बच्चों पर लागू होते हैं, चाहे वे डिसेबिलिटी वाले हों या नहीं - लेकिन डेवलपमेंटल डिसऑर्डर, देरी और डिसेबिलिटी इन प्रिंसिपल्स से अलग हो सकती हैं।

2. ग्रोथ और डेवलपमेंट के सिद्धांत टीचर्स के लिए क्यों ज़रूरी हैं?

एक PRT-लेवल का टीचर सीधे तौर पर इसके लिए ज़िम्मेदार होता है:

- आधारभूत शिक्षा का मार्गदर्शन करना
 - प्रारंभिक विकास का अवलोकन
 - देरी या कठिनाइयों की पहचान करना
 - व्यवहार प्रबंधन
 - समावेशी शिक्षा का समर्थन
- प्रिंसिपल्स को समझने से टीचर्स को ये करने में मदद मिलती है:

1. जानें कि हर उम्र में क्या उम्मीद करें

- (जैसे, 3 साल के बच्चे का अटेंशन स्पैन नैचुरली कम होता है)

2. असामान्य विकास को पहचानें

- (जैसे, कोई बच्चा 3 साल तक 2-3 शब्दों के वाक्य नहीं बोल पाता)

3. विकास के हिसाब से सही शिक्षा दें

- (जैसे, ठोस → अर्ध-ठोस → अमूर्त सीखने की प्रगति)

4. अवास्तविक उम्मीदों से बचें

- (जैसे, बहुत जल्दी हैंडराइटिंग परफेक्शन की उम्मीद करना)

5. अलग-अलग तरह से पढ़ाने की योजना बनाएं

- (समावेशी कक्षाओं में ज़रूरी)

6. दिव्यांग बच्चों की जल्दी पहचान करें और उन्हें सपोर्ट करें

- क्लासरूम में हर फ़ैसले के लिए सिद्धांत गाइड करते हैं।

3. सिद्धांत 1: विकास एक सतत प्रक्रिया है

- विकास गर्भधारण से शुरू होता है और जीवन भर चलता रहता है।

इसका मतलब है:

- इस प्रक्रिया में कोई रुकावट नहीं है
- स्किल्स पहले के स्किल्स पर आधारित होती हैं
- सीखना और विकास संचयी होते हैं
- रिग्रेशन एक समस्या का संकेत देता है

आम डेवलपमेंट के उदाहरण:

- बड़बड़ाना → शब्द → वाक्य
- घसीटना → आकृतियाँ बनाना → अक्षर लिखना
- रेंगना → खड़ा होना → चलना

विकलांगता के संदर्भ में उदाहरण:

- ID वाले बच्चे धीरे-धीरे विकसित हो सकते हैं लेकिन फिर भी कंटिन्यूटी बनाए रखते हैं
 - ASD वाले बच्चों में असमान कंटिन्यूटी (कुछ मामलों में रिग्रेशन) दिख सकती है।
 - CP वाले बच्चे मोटर लिमिटेशन की वजह से फिजिकली कंटिन्यूटी को देरी से फॉलो कर सकते हैं
- कंटिन्यूटी टीचर्स को यह समझने में मदद करती है:**

- वर्तमान स्तर
- सिखाने के लिए अगला कदम
- दीर्घकालिक विकासात्मक मानचित्र

4. सिद्धांत 2: विकास एक निश्चित और अनुमानित क्रम का पालन करता है

- बच्चे एक तय क्रम में बढ़ते हैं, हालांकि उनकी रफ़्तार अलग-अलग होती है।

कुछ यूनिवर्सल सीकेंस:

- सिर पर नियंत्रण → लुढ़कना → बैठना → रेंगना → खड़ा होना → चलना
- कूकना → बड़बड़ाना → शब्द → वाक्यांश → वाक्य
- घसीटना → रेखाएँ → आकृतियाँ → अक्षर → शब्द

दिव्यांग बच्चों में भी सीकेंस का अंदाज़ा लगाया जा सकता है:

- CP से पीड़ित बच्चा देर से चल सकता है, लेकिन पहले सिर पर कंट्रोल और फिर धड़ पर बैलेंस सीखता है।
- ASD वाला बच्चा बाद में बोल सकता है, लेकिन भाषा से पहले के व्यवहार पहले दिखते हैं
- ID वाला बच्चा मुश्किल स्किल्स से पहले आसान स्किल्स सीख सकता है
अगर सीकेंस एबनॉर्मल है → तो यह एटिपिकल डेवलपमेंट बताता है।

उदाहरण:

- बच्चा शब्द बोलता है लेकिन पहले बड़बड़ाता नहीं है → रेड फ्लैग।
टीचर्स को डेविएशन का जल्दी पता लगाने के लिए सीकेंस को ट्रैक करना चाहिए।

5. सिद्धांत 3: विकास सामान्य से विशिष्ट की ओर बढ़ता है

शुरुआती दौर में:

- हलचलें बड़ी और अनियंत्रित हैं
- बाद में परिष्कृत और विशिष्ट बन जाते हैं

मोटर के उदाहरण:

- शिशु पूरा हाथ हिलाता है → बाद में दो उंगलियों से चीज़ें उठाता है
- बेतरतीब ढंग से पैर मारना → बाद में तालमेल बिठाकर चलना

संज्ञानात्मक उदाहरण:

- सामान्य जिज्ञासा → बाद में खास सवाल
- लोगों को बड़े पैमाने पर पहचानता है → बाद में रिश्तों को समझता है

भाषा के उदाहरण:

- सामान्य ध्वनियाँ → विशिष्ट ध्वनियाँ → सार्थक शब्द

विकलांगता पर असर:

- जिन बच्चों में डेवलपमेंट में देरी होती है, वे अक्सर बड़े/आम लेवल पर ज़्यादा देर तक टिके रहते हैं, और खास स्टेज तक पहुँचने के लिए उन्हें ज़्यादा समय और स्ट्रक्चर्ड प्रैक्टिस की ज़रूरत होती है।

6. सिद्धांत 4: विकास मैथ्योरिटी और सीखने का एक प्रोडक्ट है

- मैथ्योरिटी = जेनेटिक ब्लूप्रिंट से कंट्रोल होने वाली बायोलॉजिकल ग्रोथ
- लर्निंग = अनुभव, ट्रेनिंग, माहौल की वजह से बदलाव
- दोनों आपस में बातचीत करते हैं।

परिपक्वता सीखने में सक्षम बनाती है

एक बच्चा तब तक पढ़ नहीं सकता जब तक उसका दिमाग इतना मैथ्योर न हो जाए:

- प्रतीक पहचान
- दृश्य भेदभाव
- श्रवण विश्लेषण

सीखना परिपक्वता को बढ़ाता है

- अच्छे अनुभव न्यूरल कनेक्शन को मज़बूत करते हैं।

पढ़ाने के लिए मतलब:

- बच्चे के तैयार होने से पहले उस पर स्किल्स थोपें नहीं
- जब तैयारी दिखे तो मददगार माहौल दें
- सीखने के अनुभव डेवलपमेंटल स्टेज के साथ अलाइन होने चाहिए

दिव्यांगों के लिए:

- ID वाले बच्चों में मैच्योरिटी धीमी होती है → सीखने की प्रक्रिया भी धीमी होती है
- ASD वाले बच्चों में मैच्योरिटी एक जैसी नहीं होती → लर्निंग एक जैसी नहीं होती
- ADHD वाले बच्चों में एग्जीक्यूटिव मैच्योरिटी में देरी होती है → फोकस करने में मुश्किल होती है टीचर्स को यह समझना होगा कि कुछ मुश्किलें मैच्योरिटी में देरी से आती हैं, कोशिश की कमी से नहीं।

7. सिद्धांत 5: विकास सेफलोकोर्डल दिशा में होता है

सेफलो = सिर

कोर्डल = पूँछ (निचला शरीर)

विकास सिर से पैर तक होता है :

1. सिर नियंत्रण
2. गर्दन पर नियंत्रण
3. बैठक
4. खड़े होकर
5. चलना

शैक्षिक प्रासंगिकता:

- कंधे और हाथ पर कंट्रोल से पहले लिखने के लिए मजबूर नहीं होना चाहिए
- बेहतर मोटर कामों से पहले बैलेंस बनाना ज़रूरी है

विकलांगता में:

न्यूरोलॉजिकल डिसऑर्डर वाले बच्चों में ये दिक्कतें दिख सकती हैं:

- खराब हेड कंट्रोल → मोटर में देरी
- कमज़ोर धड़ कंट्रोल → पोस्चर, लिखने में दिक्कत
टीचर्स को सीखने में आने वाली मुश्किलों के पीछे की मोटर नींव को समझना चाहिए।

8. सिद्धांत 6: विकास एक प्रॉक्सिमोडिस्टल दिशा का अनुसरण करता है

प्रॉक्सिमो = केंद्र

डिस्टल = दूर के छोर

विकास शरीर के बीच के हिस्सों से लेकर हाथ-पैरों तक होता है :

1. कंधे की हरकत → बाद में उंगली की हरकत
2. पूरे हाथ का इस्तेमाल → बाद में कलाई और उंगली पर कंट्रोल

कक्षा अनुप्रयोग:

- फाइन मोटर काम (लिखना, काटना) कंधे और हाथ की ताकत के बाद होने चाहिए
- जिन बच्चों की कोर मसल्स कमज़ोर होती हैं, उन्हें अक्सर हैंडराइटिंग में दिक्कत होती है।

विकलांगता में:

- CP बच्चों को डिस्टल कंट्रोल में दिक्कत हो सकती है → अडैप्टिव राइटिंग टूल्स की ज़रूरत है
- ऑटिज़्म/ID से समझ कमज़ोर हो सकती है → लिखने से पहले एक्टिविटी की ज़रूरत होती है

9. सिद्धांत 7: विकास आपस में जुड़ा हुआ है

- डोमेन अकेले डेवलप नहीं होते।
- हर एरिया दूसरे पर असर डालता है।

शारीरिक ↔ संज्ञानात्मक

- शारीरिक खेल मस्तिष्क के विकास को बढ़ाता है
- मस्तिष्क के विकास से समन्वय में सुधार होता है

संज्ञानात्मक ↔ भाषा

- बेहतर सोच → बेहतर वोकैबुलरी
- बेहतर भाषा → बेहतर रीज़निंग

सामाजिक ↔ भावनात्मक

- सुरक्षित लगाव → स्वस्थ भावनाएं
- इमोशनल स्थिरता → बेहतर सहकर्मी संबंध

विकलांगता के उदाहरण:

- सुनने की क्षमता में कमी से भाषा पर असर पड़ता है → पढ़ाई पर असर पड़ता है → सोशल स्किल्स पर असर पड़ता है
- ADHD ध्यान पर असर डालता है → सीखने में रुकावट डालता है → व्यवहार पर असर डालता है
- CP मोटर स्किल्स पर असर डालता है → एक्सप्लोरेशन को कम करता है → कॉग्निटिव ग्रोथ पर असर डालता है
की अलग-अलग समस्याओं को नहीं, बल्कि पूरे बच्चे को देखना चाहिए।

10. सिद्धांत 8: विकास व्यक्तिगत है (अलग-अलग दरें)

बच्चे अलग-अलग होते हैं:

- विकास की गति
- सीखने की शैली
- रुचियाँ
- ताकत
- कमजोरियों

ये बदलाव इसलिए होते हैं:

- आनुवंशिकता
- पर्यावरण
- विकलांग
- स्वास्थ्य की स्थिति

उदाहरण:

- एक बच्चा 10 महीने में चलता है, दूसरा 15 महीने में - दोनों नॉर्मल हैं
- एक बच्चा जल्दी बोलता है, दूसरा देर से
- कुछ बच्चे जल्दी पढ़ लेते हैं, दूसरों को दिक्कत होती है

समावेशी शिक्षा के लिए:

- टीचरों को बच्चों की तुलना नहीं करनी चाहिए।
- हर बच्चा अपनी गति से आगे बढ़ता है।

विकलांगता में:

- देरी ज्यादा हो सकती है
- विविधता व्यापक है
- माइलस्टोन सामान्य समय में पूरे नहीं हो सकते

11. सिद्धांत 9: विकास के महत्वपूर्ण दौर होते हैं

- एक ज़रूरी समय वह होता है जब कोई स्किल सबसे आसानी से डेवलप होती है।

उदाहरण:

- भाषा का विकास: 6 साल की उम्र से पहले सबसे ज्यादा
- लगाव बनना: पहले 2 साल
- संवेदी एकीकरण: प्रारंभिक बचपन
- मोटर स्किल्स: जन्म से 5 साल तक

अगर स्टिम्युलेशन की कमी है:

- विकास में देरी हो सकती है
- बाद में पकड़ना मुश्किल

विकलांगता के संदर्भ में:

जल्दी दखल देना ज़रूरी है क्योंकि:

- ASD को जल्दी सामाजिक उत्तेजना की ज़रूरत होती है
 - SLD भाषा विकास में शुरुआती संकेत दिखाता है
 - CP को शुरुआती मोटर थेरेपी से फ़ायदा होता है
- ज़रूरी समय में जल्दी पहचान ज़रूरी हो जाती है।

12. सिद्धांत 10: विकास सरल से जटिल की ओर बढ़ता है

- डेवलपमेंट आसान जवाबों से शुरू होता है, फिर मुश्किल स्किल्स से।

उदाहरण:

- खाना → चम्मच पकड़ना → उंगलियों का सही इस्तेमाल करना
 - चीज़ों को गिनना → अंकों को समझना → ऑपरेशन करना
 - आकृतियों का मिलान → वर्गीकरण → तर्क
- दिव्यांग बच्चों को ज्यादा समय लग सकता है लेकिन फिर भी वे इस नियम का पालन करते हैं।

13. सिद्धांत 11: विकास में अलग-अलग क्षेत्रों के लिए अलग-अलग दरें शामिल हैं

एक बच्चा:

- जल्दी बोलो लेकिन देर से चलो
- जल्दी चलें लेकिन देर से बोलें
- सामाजिक रूप से परिपक्व लेकिन शैक्षणिक रूप से कमजोर होना
- पढ़ाई में आगे रहें लेकिन इमोशनली नासमझ हों

लर्निंग डिसेबिलिटी की पहचान करने के लिए यह बहुत ज़रूरी है:

- SLD वाले बच्चों का IQ नॉर्मल/हाई हो सकता है लेकिन पढ़ने में दिक्कत हो सकती है
- ASD वाले बच्चों की याददाश्त तेज़ हो सकती है लेकिन सोशल स्किल्स कमज़ोर हो सकती हैं टीचर्स को बच्चे की **प्रोफ़ाइल के आधार पर प्लान बनाना चाहिए**, सिर्फ़ उम्र के आधार पर नहीं।

14. सिद्धांत 12: विकास पर वंशानुक्रम और पर्यावरण दोनों का असर होता है

आनुवंशिकता:

- आनुवंशिक क्षमता
- शरीर - रचना
- मस्तिष्क में वृद्धि
- स्वभाव

पर्यावरण:

- पोषण
- पेरेंटिंग
- विद्यालय
- सामाजिक वातावरण
- अवसर

विकलांगता में:

- कुछ कंडीशन हेरेडिटरी होती हैं (जैसे, डाउन सिंड्रोम)
- दूसरी एनवायरनमेंटल (कुपोषण, इन्फेक्शन) कई इंटरैक्शन-बेस्ड होती हैं (प्रीमैच्योरिटी + एनवायरनमेंट)
- दोनों को समझने से सपोर्टिव टीचिंग में मदद मिलती है।

15. सिद्धांत 13: विकास लचीलापन दिखाता है

- प्लास्टिसिटी = बदलने या एडजस्ट करने की क्षमता।
- बचपन में दिमाग सबसे ज़्यादा प्लास्टिक होता है।

आशय:

- प्रारंभिक हस्तक्षेप काम करता है
- सीखने से देरी की भरपाई हो सकती है
- ट्रेनिंग से दिव्यांग बच्चों में स्किल्स बेहतर होती हैं
- चोट लगने के बाद दिमाग खुद को ढाल सकता है (कुछ हद तक)

प्लास्टिसिटी इसकी नींव है:

- उपचारात्मक शिक्षण
- चिकित्सा
- व्यवहार संशोधन

16. सिद्धांत 14: विकास एक समग्र प्रक्रिया है

सभी डोमेन मिलकर एक पूरा बच्चा बनाते हैं:

- भौतिक
 - संज्ञानात्मक
 - सामाजिक
 - भावनात्मक
 - भाषा
 - नैतिक
 - अनुकूली
- टीचर्स को सिर्फ़ पढ़ाई ही नहीं, बल्कि सभी एरिया पर ध्यान देना चाहिए।
खासकर दिव्यांग बच्चों में, पूरा विकास ही लक्ष्य है।

17. समावेशी कक्षाओं में सिद्धांतों का अनुप्रयोग

- 1. विकास के लिए सही एक्टिविटीज़ दें**
 - डेवलपमेंट लेवल के साथ टास्क मैच करें।
- 2. असामान्य विकास को जल्दी पहचानें**
 - सीकेंस या रेट में डेविएशन देखें।
- 3. आसान से मुश्किल टीचिंग को फ़ॉलो करें**
 - ठोस से → चित्रात्मक → अमूर्त।

4. पढ़ाई के लिए तैयार होने के लिए मोटर डेवलपमेंट में मदद करें
 - लिखने से पहले फाइन मोटर, स्पोर्ट्स से पहले ग्राँस मोटर।
5. कॉग्निटिव ग्रोथ को सपोर्ट करने के लिए सेंसरी एक्सपीरियंस का इस्तेमाल करें
 - खोज से दिमाग का विकास बेहतर होता है।
6. जिन बच्चों की मैच्योरिटी देर से होती है, उन्हें ज़्यादा समय दें
 - जल्दबाज़ी न करें; निर्देश एडजस्ट करें।
7. अलग-अलग सीखने वालों के लिए अलग-अलग स्ट्रेटेजी इस्तेमाल करें
 - क्योंकि विकास अलग-अलग होता है।
8. माता-पिता के साथ सहयोग करें
 - डेवलपमेंट से जुड़ी बातें शेयर करें।
9. पर्सनलाइज़्ड प्लान बनाएं
 - रियलिस्टिक गोल सेट करने के लिए प्रिंसिपल्स का इस्तेमाल करें।

18. निष्कर्ष

ग्रोथ और डेवलपमेंट के सिद्धांत थ्योरेटिकल नहीं हैं - वे प्रैक्टिकल गाइडलाइंस हैं जो टीचर्स की मदद करते हैं:

- बच्चों को समझें
 - देरी की पहचान
 - योजना निर्देश
 - व्यवहार प्रबंधित करें
 - समावेशी कक्षाएँ बनाएँ
 - विकलांग बच्चों को प्रभावी ढंग से सहायता प्रदान करना
- ये सिद्धांत शुरुआती बचपन और स्पेशल एजुकेशन में सभी कामों का आधार बनते हैं।

विकास को प्रभावित करने वाले कारक

1. परिचय

ग्रोथ और डेवलपमेंट दो बड़ी ताकतों के आपसी तालमेल से बनते हैं:

1. आनुवंशिकता / जैविक कारक (प्रकृति)
2. पर्यावरण / बाहरी कारक (पालन-पोषण)
 - बच्चों के विकास के रास्ते जेनेटिक्स, जन्म से पहले की स्थितियों, न्यूट्रिशन, परिवार के साथ बातचीत, सामाजिक रिश्ते, कम्युनिटी कल्चर, आर्थिक हालात, स्कूलिंग, साइकोलॉजिकल माहौल और विकलांगता की स्थितियों से प्रभावित होते हैं। विकास मल्टीफैक्टोरियल होता है, यानी कोई भी एक फैक्टर अकेले काम नहीं करता।

इन प्रभावों को समझना ज़रूरी है:

- विकासात्मक देरी की पहचान
 - उपयुक्त शिक्षण वातावरण बनाना
 - विकलांग बच्चों के लिए हस्तक्षेप की योजना बनाना
 - व्यवहार को समझना
 - समावेशी कक्षाओं का डिजाइन
- इस चैप्टर में हर फैक्टर को डिटेल में बताया गया है।

2. जैविक / वंशानुगत कारक

- ये अंदरूनी वजहें हैं जो जन्म के समय मौजूद होती हैं, जेनेटिकली होती हैं, या बायोलॉजिकल कंडीशन की वजह से होती हैं।

2.1 आनुवंशिक कारक

जीन निर्धारित करते हैं:

- शरीर - रचना
- मस्तिष्क में वृद्धि
- व्यक्तित्व प्रवृत्तियाँ
- बुद्धि सीमा
- स्वभाव
- कुछ विकलांगताओं के प्रति संवेदनशीलता

जेनेटिक प्रभाव के उदाहरण:

- आंखों का रंग, ऊँचाई की संभावना
- डाउन सिंड्रोम जैसे गुणसूत्र संबंधी विकार

- फ्रैजाइल एक्स जैसे आनुवंशिक विकार
- वंशानुगत स्वभाव पैटर्न (शांत, सक्रिय, भयभीत)
जेनेटिक्स ग्रोथ की **ऊपरी और निचली लिमिट तय करता है** ; माहौल तय करता है कि उस पोटेंशियल का कितना हिस्सा हासिल किया जा सकता है।

2.2 प्रसवपूर्व जैविक कारक

- गर्भ के अंदर के नौ महीने विकास पर बहुत ज़्यादा असर डालते हैं।

फ़ैक्टर में शामिल हैं:

- मातृ पोषण
- हार्मोनल संतुलन
- प्रसवपूर्व देखभाल का अभाव
- गंभीर तनाव
- ड्रग्स, तंबाकू, शराब
- संक्रमण (रूबेला, HIV, TORCH)
- विषाक्त पदार्थों/प्रदूषकों के संपर्क में आना
- आरएच असंगति

प्रीनेटल फेज़ के दौरान कोई भी गड़बड़ी होने से ये हो सकता है:

- जन्म के समय कम वजन
- कुसमयता
- जन्म दोष
- तंत्रिका संबंधी दुर्बलताएँ
- विकास में होने वाली देर
सेरेब्रल पाल्सी, सुनने में दिक्कत, और जन्म से जुड़ी दिक्कतें अक्सर जन्म से पहले की वजहों से जुड़ी होती हैं।

2.3 प्रसवकालीन कारक (जन्म के दौरान)

- जन्म के दौरान होने वाली समस्याएं दिमाग के काम करने के तरीके पर असर डाल सकती हैं।

आम प्रसवकालीन जोखिम:

- जन्म श्वासावरोध (ऑक्सीजन की कमी)
- लंबे समय तक प्रसव
- गर्दन के चारों ओर गर्भनाल
- जन्म के समय कम वजन
- समय से पहले प्रसव
- वाद्य यंत्रों से प्रसव में चोटें
- नवजात पीलिया (अनुपचारित)

ये इसमें योगदान दे सकते हैं:

- मस्तिष्क पक्षाघात
- बहरापन
- संज्ञानात्मक बधिरता
टीचर्स को यह ध्यान देना चाहिए कि क्या बच्चे को पेरिनेटल कॉम्प्लीकेशंस थीं - अक्सर इसी वजह से शुरुआती देरी होती है।

2.4 प्रसवोत्तर जैविक कारक

- ये जन्म के बाद बायोलॉजिकल प्रभाव हैं।

इसमें शामिल है:

- कुपोषण
- संक्रमण (मेनिन्जाइटिस, एन्सेफलाइटिस)
- चोटें/आघात
- गंभीर बीमारी
- हार्मोनल विकार (थायरॉइड असंतुलन)
- मिरगी
- संवेदी दुर्बलताएँ
- गंभीर एलर्जी
रेगुलर हेल्थकेयर डेवलपमेंट के नतीजों पर काफी असर डालता है।

2.5 संवैधानिक / शारीरिक स्वास्थ्य

स्वस्थ बच्चों में ये गुण होते हैं:

- अधिक ऊर्जा
 - बेहतर एकाग्रता
 - बेहतर शारीरिक गतिविधि
- बार-बार बीमार पड़ना → बार-बार स्कूल से दूर रहना → पढ़ाई, समाज और शारीरिक मामलों में खराब विकास।

3. पर्यावरणीय / बाहरी कारक

- पर्यावरण लगातार बायोलॉजिकल फैक्टर्स के साथ इंटरैक्ट करता है।
- खराब पर्यावरण जेनेटिक पोटेन्शियल को रोक सकता है; अच्छा पर्यावरण इसे ज़्यादा से ज़्यादा कर सकता है।

3.1 भौतिक वातावरण

इसमें शामिल हैं:

- घर की सफाई
 - सुरक्षा
 - घूमने, खेलने के लिए जगह
 - प्रदूषण का स्तर
 - सूर्य के प्रकाश तक पहुँच
- भीड़-भाड़ वाला, गंदा और असुरक्षित माहौल मोटर और सोशियो-इमोशनल डेवलपमेंट में देरी करता है।

विकलांग बच्चों के लिए:

- सुरक्षित, व्यवस्थित वातावरण ज़रूरी हैं
- सेंसरी-सेंसिटिव बच्चों (ASD) को रेगुलेशन-फ्रेंडली माहौल की ज़रूरत होती है

3.2 पोषण

- न्यूट्रिशन सबसे ज़रूरी एनवायरनमेंटल फैक्टर है।

कुपोषण से ये होता है:

- अवरुद्ध विकास
 - विलंबित मोटर कौशल
 - कमजोर प्रतिरक्षा
 - कम ध्यान
 - खराब याददाश्त
 - कम ऊर्जा
 - चिड़चिड़ापन
 - बार-बार बीमार पड़ना
 - खराब स्कूल प्रदर्शन
- बचपन में, न्यूट्रिशन सीधे दिमाग के विकास को आकार देता है।

ज़्यादा जंक फूड खाने से ये होता है:

- मोटापा
- कम सहनशक्ति
- एकाग्रता संबंधी कठिनाइयाँ

3.3 पारिवारिक वातावरण

- परिवार पहला सीखने का माहौल है।

हेल्दी फैमिली माहौल में ये शामिल हैं:

- स्नेह
- सुरक्षा
- उत्तेजना
- मार्गदर्शन
- दिनचर्या
- सकारात्मक रोल मॉडल

खराब पारिवारिक माहौल में शामिल हैं:

- टकराव
- दुर्व्यवहार करना
- उपेक्षा करना
- अतिसंरक्षण
- असंगत नियम
- कठोर अनुशासन

अस्वस्थ वातावरण के प्रभाव:

- चिंता
- भावनात्मक समस्याएं
- ध्यान संबंधी समस्याएं
- व्यवहार संबंधी कठिनाइयाँ

विकलांग बच्चों पर प्रभाव:

- स्वीकृति से प्रगति होती है
- रिजेक्शन से इमोशनल नुकसान होता है
- अतिसंरक्षण स्वतंत्रता को रोकता है
- अच्छे विकास के लिए टीचरों को परिवारों के साथ मिलकर काम करना चाहिए।

3.4 सामाजिक-आर्थिक स्थिति (एसईएस)

SES इन पर असर डालता है:

- पोषण
- स्वास्थ्य सेवा तक पहुंच
- शैक्षिक अवसरों
- सीखने की सामग्री
- स्थिरता
- भावनात्मक माहौल

कम SES की वजह से:

- अंडर उत्तेजना
- स्कूल के लिए खराब तैयारी
- भाषा में देरी
- तनाव और चिंता

हाई SES आम तौर पर देता है:

- समृद्ध पर्यावरण
 - सीखने के संसाधनों के संपर्क में आना
 - माता-पिता की अधिक भागीदारी
- लेकिन, सिर्फ SES से नतीजे तय नहीं होते; सपोर्टिव पेरेंटिंग गरीबी को कम कर सकती है।

3.5 माता-पिता और बच्चे का रिश्ता

प्यार और रिस्पॉन्सिव पेरेंटिंग से ये होता है:

- सुरक्षित लगाव
- भावनात्मक स्थिरता
- आत्मविश्वास
- सामाजिक क्षमता
- बेहतर आत्म-नियंत्रण

कठोर या लापरवाही से पालन-पोषण करने से ये होता है:

- डर
- आक्रमण
- निकासी
- खराब भावनात्मक विनियमन
- असुरक्षित लगाव

विकलांग बच्चों के लिए:

- पॉजिटिव पेरेंटिंग = सबसे अच्छा नतीजा
- नकारात्मक पालन-पोषण = बिगड़ता व्यवहार

3.6 शुरुआती स्टिमुलेशन और सीखने के मौके

बच्चों को चाहिए:

- खिलौने
- किताबें
- खेल
- संचार
- इंटरैक्शन
- अन्वेषण

स्टिम्युलेशन से वंचित बच्चों में ये लक्षण दिख सकते हैं:

- विलंबित भाषा
 - कमजोर समस्या-समाधान
 - कम सामाजिक कौशल
- दिव्यांग बच्चों को **स्ट्रक्चर्ड स्टिम्युलेशन** (स्पीच थेरेपी, सेंसरी प्ले, मोटर एक्टिविटीज़) की ज़रूरत होती है।

3.7 विद्यालय का वातावरण

- एक सपोर्टिव स्कूल का माहौल डेवलपमेंट को बढ़ावा देता है।

एक हेल्दी स्कूल माहौल की खासियतें:

- देखभाल करने वाले शिक्षक
- संरचित शिक्षा
- समावेश
- सकारात्मक सहकर्मि संबंध
- सुसंगत दिनचर्या
- सुरक्षित वातावरण

स्कूल के बुरे अनुभव:

- बदमाशी
- कठोर अनुशासन
- भेदभाव
- भीड़भाड़ वाली कक्षाएँ
- शिक्षक पूर्वाग्रह

इससे ये प्रभावित हो सकता है:

- प्रेरणा
 - आत्म-सम्मान
 - शैक्षिक उपलब्धि
- दिव्यांग बच्चों के लिए स्कूल और भी बड़ी भूमिका निभाता है।

3.8 सांस्कृतिक कारक

संस्कृति का प्रभाव:

- भाषा
- भावनात्मक अभिव्यक्ति
- जातिगत भूमिकाएँ
- नैतिक विकास
- सामाजिक अपेक्षाएँ
- विकलांगता के बारे में मान्यताएँ

उदाहरण:

- कुछ संस्कृतियाँ औपचारिक शैक्षणिक निर्देश में देरी करती हैं
 - कुछ संस्कृतियाँ विकलांगता को कलंकित करती हैं
 - कुछ कल्चर शुरू से ही आज़ादी को बढ़ावा देते हैं; दूसरे नहीं
- टीचर्स को डेवलपमेंट को बढ़ावा देते समय कल्चरल बैकग्राउंड का सम्मान करना चाहिए।

3.9 सामुदायिक वातावरण

एक सपोर्टिव कम्युनिटी देती है:

- सुरक्षित खेल क्षेत्र
- सहकर्मि समूह
- सामुदायिक रोल मॉडल
- सामाजिक सीखने के अवसर

एक नुकसानदायक कम्युनिटी माहौल में ये शामिल हैं:

- हिंसा
 - सुरक्षा की कमी
 - सुविधाओं की कमी
 - अपराध
 - दवाई का दुरुपयोग
- इससे सामाजिक, भावनात्मक और नैतिक विकास पर बुरा असर पड़ता है।

3.10 मीडिया और प्रौद्योगिकी

मध्यम, गाइडेड मीडिया एक्सपोजर से ये हो सकता है:

- ज्ञान में वृद्धि
- भाषा में सुधार
- अवधारणाएँ सिखाएँ

लेकिन बहुत ज्यादा या नुकसानदायक मीडिया की वजह से ये होता है:

- ध्यान संबंधी समस्याएँ
- नींद की गड़बड़ी
- कम शारीरिक गतिविधि
- आक्रामकता (हिंसक सामग्री के कारण)
- स्क्रीन की लत

ASD/ADHD वाले बच्चे मीडिया के ज्यादा इस्तेमाल के प्रति ज्यादा संवेदनशील होते हैं।

3.11 सहकर्मी समूह का प्रभाव

साथियों का प्रभाव:

- सामाजिक कौशल
- पहचान
- संचार
- व्यवहार विनियमन
- भावनात्मक परिपक्वता

पॉजिटिव पीयर ग्रुप डेवलपमेंट को बढ़ावा देते हैं; नेगेटिव ग्रुप रिस्क बिहेवियर को बढ़ाते हैं।

दिव्यांग बच्चों को अक्सर साथियों के साथ एक्सेटेंस में मुश्किल होती है; टीचरों को साथियों को शामिल करने में मदद करनी चाहिए।

3.12 शैक्षिक इनपुट

पढ़ाने की क्वालिटी पर असर:

- ज्ञान संबंधी विकास
- प्रेरणा
- महत्वपूर्ण सोच
- भाषा विकास

अच्छी शिक्षा:

- जुड़ाव बनाता है
- जिज्ञासा विकसित करता है
- धीरे-धीरे कौशल का निर्माण होता है

खराब शिक्षण:

- भय पैदा करता है
 - सीखने के परिणामों को कम करता है
 - ड्रॉपआउट दरों में वृद्धि
- इनक्लूसिव क्लासरूम में टीचरों को अलग-अलग तरह से सिखाना चाहिए।

4. विकास को प्रभावित करने वाले मनोवैज्ञानिक कारक

- इंसान का विकास अंदरूनी साइकोलॉजिकल प्रोसेस से भी प्रभावित होता है।

4.1 भावनात्मक सुरक्षा और लगाव

सुरक्षित अटैचमेंट से ये होता है:

- आत्मविश्वास
- अन्वेषण
- समानुभूति
- सामाजिक क्षमता

असुरक्षित लगाव की वजह से ये होता है:

- डर
- चिपचिपाहट
- आक्रमण
- सामाजिक वापसी

दिव्यांग बच्चे अक्सर इन वजहों से इमोशनली परेशान रहते हैं:

- माता-पिता का तनाव
 - सामाजिक अस्वीकृति
 - संचार कठिनाइयों
- इमोशनल सपोर्ट बहुत ज़रूरी है।

4.2 प्रेरणा

बहुत ज़्यादा मोटिवेटेड बच्चे:

- और मेहनत करें
- दृढ़ रहना
- अन्वेषण करना
- नए कौशल सीखें

कम मोटिवेशन की वजह से ये होता है:

- परिहार
- खराब भागीदारी
- कम प्रदर्शन

दिव्यांग बच्चों को अक्सर इन चीज़ों की ज़रूरत होती है:

- संरचित प्रेरणा
- बार-बार सुदृढीकरण
- प्राप्त करने योग्य लक्ष्य

4.3 आत्म-अवधारणा और आत्म-सम्मान

आत्म-सम्मान को आकार:

- आत्मविश्वास
- समाज में व्यवहार
- सीखने की इच्छा

कम आत्म-सम्मान इन वजहों से हो सकता है:

- असफलता
 - बदमाशी
 - आलोचना
 - विकलांगता
 - शैक्षणिक संघर्ष
- टीचर्स को सफलता वाला माहौल बनाना चाहिए।

4.4 बुद्धिमत्ता और संज्ञानात्मक क्षमता

- ज़्यादा सोचने-समझने की क्षमता → तेज़ विकास
- कम सोचने-समझने की क्षमता → धीमा विकास
- ID वाले बच्चों में सीखने की रफ़्तार धीमी होती है।
- SLD वाले बच्चों में इंटेलिजेंस नॉर्मल/ज़्यादा होती है लेकिन सीखने के कुछ खास एरिया पर असर पड़ता है।

5. विकलांगता से जुड़े खास फैक्टर

- दिव्यांग बच्चों को अक्सर और मुश्किलों का सामना करना पड़ता है।

5.1 हानि-विशिष्ट सीमाएँ

- सुनने की क्षमता में कमी भाषा और बातचीत को प्रभावित करती है
 - दृष्टि दोष खोज और साक्षरता को प्रभावित करता है
 - CP मोबिलिटी और फाइन मोटर स्किल्स को प्रभावित करता है
 - ASD सामाजिक और संचार कौशल को प्रभावित करता है
 - ADHD ध्यान और आवेग नियंत्रण को प्रभावित करता है
 - ID कॉग्निशन और अडैप्टिव बिहेवियर को प्रभावित करता है
- टीचर्स को उम्मीदों को डेवलपमेंटल प्रोफ़ाइल के साथ अलाइन करना होगा।

5.2 पर्यावरण में बाधाएँ

- पहुँच की कमी
 - समावेशी प्रथाओं का अभाव
 - कलंक
 - गलत धारणाएँ
 - सहकर्मी अस्वीकृति
 - सीमित स्रोत
- ये कारण विकलांगता से ज़्यादा विकास में बाधा डालते हैं।

5.3 माता-पिता की जागरूकता और स्वीकृति

- सपोर्टिव पैरेंट्स → बेहतर नतीजे
- अनजान पैरेंट्स → दखल में देरी

- इनकार करने वाले पेरेंट्स → थेरेपी का विरोध
- काउंसलिंग ज़रूरी है।

6. कारकों की परस्पर क्रिया

- डेवलपमेंट कभी भी किसी एक फैक्टर से तय नहीं होता।
- कई फैक्टर एक साथ मिलकर काम करते हैं।

उदाहरण 1:

- खराब पोषण + कम SES + उत्तेजना की कमी → सोचने-समझने में देरी

उदाहरण 2:

- जेनेटिक झुकाव + परिवार का अच्छा सपोर्ट + जल्दी इलाज → बेहतर भाषा विकास

उदाहरण 3:

- विकलांगता + सहायक शिक्षक + समावेशी कक्षा → बेहतर शैक्षणिक प्रदर्शन
- टीचर्स को समझना चाहिए कि कॉज़ेशन कॉम्प्लेक्स है।

7. टीचर डेवलपमेंटल फैक्टर्स को कैसे एड्रेस कर सकते हैं

1. बेहतर क्लासरूम अनुभव दें
 - गेम्स, एक्टिविटीज़, डिस्कशन, सेंसरी प्ले।
2. स्वस्थ आदतों को बढ़ावा दें
 - न्यूट्रिशन अवेयरनेस, हाइजीन रूटीन।
3. टीचर-स्टूडेंट के बीच अच्छे रिश्ते बनाएं
4. माता-पिता को गाइडेंस देकर सपोर्ट करें
5. जोखिम वाले बच्चों की जल्दी पहचान करें
 - डेवलपमेंट में रेड फ्लैग्स पर नज़र रखें।
6. अलग-अलग निर्देश दें
7. इमोशनली सेफ़ माहौल बनाएँ
8. साथियों को शामिल करने में मदद करें
9. विकास के लिए सही तरीकों का इस्तेमाल करें
10. दिव्यांग बच्चों के लिए सुलभता की वकालत करें

8. निष्कर्ष

बायोलॉजिकल, एनवायरनमेंटल, साइकोलॉजिकल, सोशल, कल्चरल और डिसेबिलिटी-स्पेसिफिक फैक्टर्स के एक कॉम्प्लेक्स जाल से बनता है। इन फैक्टर्स को समझने से टीचर्स को मदद मिलती है:

- देरी की पहचान
- व्यवहार को समझें
- उपयुक्त शिक्षण डिजाइन करें
- बच्चों को प्रभावी ढंग से सहायता प्रदान करना
- माता-पिता के साथ सहयोग करें
- समावेशी कक्षाएँ बनाएँ

यह समझ अच्छी क्वालिटी वाले शुरुआती बचपन और स्पेशल एजुकेशन के लिए ज़रूरी है।

विकास के क्षेत्र

1. परिचय

- बच्चों में डेवलपमेंट कोई एक ही डायमेंशन वाला प्रोसेस नहीं है।
- यह कई आपस में जुड़े हुए डोमेन में होता है जो मिलकर पूरे बच्चे को बनाते हैं। इन डोमेन को समझना टीचरों के लिए बहुत ज़रूरी है, खासकर इनक्लूसिव क्लासरूम में, क्योंकि डेवलपमेंट में देरी या डिसेबिलिटी अक्सर इनमें से एक या ज़्यादा एरिया पर असर डालती हैं।

डेवलपमेंट के मुख्य डोमेन में शामिल हैं:

1. शारीरिक विकास
2. मोटर विकास (सकल और ठीक)
3. ज्ञान संबंधी विकास
4. भाषा विकास
5. सामाजिक विकास
6. भावनात्मक विकास
7. नैतिक विकास

हर डोमेन दूसरे डोमेन पर असर डालता है। एक डोमेन में देरी होने पर अक्सर दूसरे डोमेन पर भी असर पड़ता है। इस चैप्टर में हर डोमेन के बारे में डिटेल में बताया गया है, और इनक्लूसिव एजुकेशन पर इसके क्या असर होंगे।